इंडियन फैडरेशन ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट्स बून्दी की नवीन जिला कार्यकारिणी घोषित

बून्दी। बुधवार को इंडियन फेडरेशन ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट्स (आईएफडब्ल्यूजे) राजस्थान की बून्दी जिला इकाई की नवीन कार्यकारिणी सहित विधानसभा प्रभारियों की घोषणा की गई।प्रदेशाध्यक्ष उपेंद्र सिंह राठौड़ के निर्देशन में जिलाध्यक्ष कमलेश शर्मा ने नई कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए विभिन्न पदों पर नियुक्तियां की हैं। नई टीम को पत्रकार हितों की रक्षा, निष्पक्ष पत्रकारिता को बढ़ावा देने तथा संगठन को और अधिक मजबूत और सक्रिय बनाने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। साथ ही विधानसभा प्रभारियों की भी घोषण करते हुए अंचल राठौर को बून्दी विधान सभा, महेन्द्र शर्मा को हिण्डोली विधानसभा तथा नंदप्रकाश खारवाल को केषवराय पाटन विधानसभा प्रभारी नियुक्त किया गया है।जिलाध्यक्ष कमलेश शर्मा ने नई जिला कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए वरिष्ठ पत्रकार दिनेश विजयवर्गीय को सरंक्षक तथा राजकुमार दाधीच, दिलीप बाकलीवाल, अखिलेश जैन, राजीव सक्सैना न्यूज चक्र, राजीव सक्सैना को परामर्षक व अनुराग शर्मा को विधिक परामर्शक का दायित्व सौंपा है। जिला कार्यकारिणी में उपाध्यक्ष पद पर उपाध्यक्ष पद पर निरंजन लड्ढा, मनोज गौतम, गुड्डा, हरिशंकर नायक, भोलाशंकर फुल्लाणी को नियुक्त किया है। अभिषेक जैन को महासचिव, कृष्ण कांत राठौर को जिला कोषाध्यक्ष तथा प्रणव शर्मा तथा रवि गौतम को प्रवक्ता का दायित्व सौंपा गया हैं।प्रवक्ता रवि गौतम ने बताया कि संगठन को गति देने के लिए सचिव पद पर के.पाटन के नितीन बाबर, हिण्ड़ोली के जितेन्द्र सिंह, इन्द्रगढ़ के मनीष सेन को नियुक्त किया है। इसी प्रकार कार्यकारिणी सदस्य के रूप में विशाल शर्मा, वैदेष शीहर, जगदीश प्रजापत तालेड़ा, हीरा लाल मीणा रामगंजबालाजी, हेमराज सैनी, प्रवीण सैनी, मुकेष श्रृंगी, मुकेश नागर नैंनवां, भूरे खान डाबी, लखन झांझोट लाखेरी, प्रियांषु शर्मा सुवांसा, सत्यनारायण शर्मा नैंनवां, मुकेश लुहाड़िया के.पाटन, को शामिल किया गया है। जिला कार्यकारिणी में विशिष्ट आमंत्रित सदस्य के रूप में संदीप व्यास, नितिन षौतम, रईस खान, तरूण राठौर, पीयुष पाचक, अभिषेक वधवा, रघुनन्दन श्रृंगी तथा सर्वेष तिवारी को शामिल किया है।

पत्रकारों के हितों व सुरक्षा के लिए करेंगे संघर्ष

जिलाध्यक्ष कमलेश शर्मा ने बताया कि आईएफडब्ल्यूजे देश का सबसे बड़ा व मजबूत संगठन हैं, जो सदैव पत्रकार हित में संघर्षरत है। संगठन की नई कार्यकारिणी केवल संगठनात्मक विस्तार नहीं, बल्कि पत्रकारों के हितों व सुरक्षा के लिए एक मजबूत पहल है। संगठन आने वाले समय में पत्रकारों के प्रशिक्षण, सामाजिक सुरक्षा, कानूनी सहायता, स्वास्थ्य सुविधाओं और कल्याणकारी योजनाओं पर भी विशेष रूप से कार्य करेगा। उन्होंने कहा कि पत्रकारों के सम्मान, अधिकार और सुरक्षा से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा तथा हर सदस्य के हितों की रक्षा के लिए संगठन हमेशा अग्रणी भूमिका निभाएगा।

जिला संरक्षक दिनेश विजयवर्गीय ने सभी नव-नियुक्त पदाधिकारियों और कार्यकारिणी सदस्यों को शुभकामनाएं देते हुए विश्वास जताया कि पूरी टीम निष्पक्ष पत्रकारिता, संगठन की मजबूती और पत्रकार एकता को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने का कार्य करेगी। साथ ही इन्होंने इसे पत्रकार हित में एक दूरदर्शी और ऐतिहासिक कदम बताया।

रॉयल एनफील्ड ने 2026 क्लासिक 350 पेश की, जिसमें हैं ज्यादा कम्फर्ट और बेहतर फीचर

मिड-साईज मोटरसाईकल सेगमेंट (250सीसी-750सीसी) में ग्लोबल लीडर, रॉयल एनफील्ड ने अपनी आईकोनिक क्लासिक 350 में राईडर पर केंद्रित दो फीचर पेश किए हैं, जिससे राईडिंग का अनुभव बेहतर होगा और मोटरसाईकल का टाईमलेस कैरेक्टर भी बरकरार रहेगा।

हर राईड को ज्यादा आसान बनाने के लिए 2026 क्लासिक 350 में ज्यादा आसान क्लच एक्शन के लिए असिस्ट व स्लिपर क्लच दिया गया है, जिससे शहर की सड़कों पर और लंबी दूरी की राईड बहुत सरल बन जाती है। यह फीचर ज्यादा स्मूथ अपशिफ्ट और डाउनशिफ्ट प्रदान करता है, जिससे विभिन्न तरह की राईडिंग के दौरान राईडर का आत्मविश्वास और कम्फर्ट बढ़ता है। रोजमर्रा की राईड के लिए इसे और अधिक व्यावहारिक बनाने के लिए क्लासिक 350 में यूएसबी टाईप-सी फास्ट चार्जिंग पोर्ट भी दिया गया है, ताकि राईडर्स राईड के दौरान अपना स्मार्टफोन और अन्य कॉम्पैटिबल डिवाईस चार्ज कर सकें। यह फीचर राईडर्स को दैनिक आवागमन या लंबी राईड के दौरान कनेक्टेड रहने में मदद करता है।

क्लासिक 350 में रॉयल एनफील्ड का 349सीसी जे-सीरीज इंजन लगा है, जो इसे ब्रांड का सिग्नेचर कैरेक्टर, जबरदस्त लो-एंड टॉर्क और स्मूथ परफॉर्मेंस प्रदान करता है। क्लासिक 350 अपने आरामदायक अपराईट राईडिंग पोस्चर, बैलेंस्ड चेसिस और कॉन्फिडेंट ब्रेकिंग के साथ शहर की सड़कों, खुले हाईवे और वीकेंड राईड्स के दौरान शानदार अनुभव सुनिश्चित करती है।

क्लासिक 350 का डिजाईन रॉयल एनफील्ड की डिजाईन हैरिटेज पर आधारित है, जिसके आईकोनिक सिल्हूएट, हैंडक्राफ्टेड डिटेलिंग और प्रभावशाली मौजूदगी से टाईमलेस क्राफ्ट्समैनशिप प्रदर्शित होती है। अपने एंड्योरिंग कैरेक्टर को बरकरार रखते हुए आधुनिक फीचर पेश करने वाली 2026 क्लासिक 350 उन राईडर्स के लिए एक मॉडर्न क्लासिक है, जो ऑथेंटिसी, एलिगेंस और प्योर मोटरसाईक्लिंग के मायने समझते हैं।

क्लासिक 350 अपने इन राईडर केंद्रित फीचर्स के साथ आज से ऑल ड्युअल-चैनल वैरिएंट में रॉयल एनफील्ड के सभी अधिकृत स्टोर्स पर उपलब्ध है। यह मोटरसाईकल नौ आकर्षक रंगों में 187,434 रुपये (एक्सशोरूम) के शुरुआती मूल्य में आ रही है।

अपने-अपने किरदार

बात उन दिनों की है जब मैं लगभग 35 वर्ष का था और चंबा जनपद के एक दूर दराज के गांव में बतौर शिक्षक कार्यरत् था। गांव में एक व्यक्ति ने किराए के लिए बहुत बड़ा मकान बनाया हुआ था। उस मकान में ही हम 6-7 कर्मचारी रहते थे।

हीरालाल जी मेरे स्कूल में नए-नए हेड मास्टर आए तो हमने उन्हें भी यहीं इसी कैंपस में कमरा किराए पर दिलवा दिया।

स्कूल का सीनियर टीचर होने के कारण वे मुझे अपने हर एक काम में इंवॉल्व कर लेते।

हेडमास्टर हीरालाल जी बहुत ही सुलझे हुए, अनुभवी, मिलनसार , ईमानदार और कर्मठ अध्यापक थे।

जीवन के 55 बसंत देख चुके थे ।जीवन के कई पड़ावों से गुजरने के बाद उनका चिंतन सध सा गया था।

हर एक बात में उनका अनुभव छलकता- झलकता था। उनके चिंतन में भौतिकता के साथ-साथ आध्यात्मिकता भी बखूबी झलकती थी । इतने साधु स्वभाव का व्यक्ति मैंने जीवन में पहली बार देखा था। मैं उनके व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित था ।

हालांकि मैं उम्र में उनसे बेशक बहुत छोटा था परंतु उनका व्यक्तित्व और वैचारिक ताकत ही थी जो हम दोनों को एक दूसरे के करीब ले आई थी ।

कहते हैं न 'मन मिले तो मेला, गुरु मिले तो चेला। '

वरना भीड़ में भी अकेला।

यहां विचार मिलते हैं वहां आकर्षण होता है और वही आकर्षण व्यक्ति को एक दूसरे के करीब लाता है।

चूंकि हम एक ही कैंपस में रहते थे इसलिए हम स्कूल में भी साथ-साथ होते और क्वाटर पहुंच कर भी साथ-साथ।

हम घंटों देश दुनिया की बातें करते साहित्य से लेकर विज्ञान तक और भौतिकता से लेकर आध्यात्मिकता तक।

हमारी चर्चा के विषयों मैं विविक विषय होते ।

हर एक विषय पर उनकी बहुत अच्छी कमांड थी । क्योंकि वह बहुत ही अध्ययनशील व्यक्ति भी थे । उनके भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान से मैं बहुत प्रभावित था इसलिए मुझे उनका सानिध्य हमेशा अच्छा लगता था।

मैं अपनी भी व्यक्तिगत कई समस्याएं उनके साथ साझा कर लिया करता था। हर एक समस्या को वह बड़ी गंभीरता से सुनते और सही रास्ता बताते थे ...। यही उनकी वैचारिक खूबसूरती थी।

उनके इसी हुनर ने मुझे उनका मुरीद बना दिया था....।

मैं उन्हें अपना मेंटर मानता था...।

एक दिन स्कूल के बाद शाम को चाय पानी पीकर हम घूमने निकले और घूमते घूमते गांव के बाहर बने देवी मंदिर के प्रांगण में पहुंच गए।

मंदिर के पास ही खेल का मैदान था। यहां शाम को आसपास के गांवों से बच्चे खेलने के लिए आते थे।

पहाड़ी शैली में बना यह मंदिर बरसों पुराना था और गांव की धरोहर भी।

स्कूल के बाद जब कभी हमारा मन घूमने को करता तो हम यहां आ जाया करते ।

दो-तीन गांवों का यह सबसे खूबसूरत स्थान था।

मंदिर के प्रांगण में पंचायत ने एक खूबसूरत पार्क बनाया हुआ था। छोटे बच्चों को खेलने के लिए झूले सीढ़ियां इत्यादि कई उपकरण लगाए हुए थे । बड़ों को बैठने के लिए बेंच बनाए हुए थे। प्रांगण में हरी भरी घास और उनके बीच में बने हुए ये बेंच बहुत सुंदर लगते थे।

मंदिर की क्यारियों में पुजारी ने बड़े सलीके से कई तरह के रंग-बिरंगे खूबसूरत फूल उगा रखे थे ।

रंग-बिरंगे फूलों की खुशबू से सारा वातावरण महकता सा लगता था।इस मंदिर के प्रांगण से दूर-दूर तक पहाड़ों का सौंदर्य नजर आता था। नीले गगन को छूते हुए ऊंचे बर्फीले पहाड़ ऐसे लगते थे मानो बर्फ की चादर ओढ़े हुए इन पहाड़ों ने अपने सिर पर नीले रंग का दुपट्टा ओढ़ा हो। पहाड़ की तलहटी में बहती हुई नदी दूर से ऐसी लगती थी जैसे किसी कलाकार ने दोनों तरफ के पहाड़ों के बीचों बीच एक टेढ़ी-मेढ़ी रेखा उकेर दी हो। पहाड़ के बीचों-बीच दिखती घुमावदार सड़क और उस पर गुजरती हुई इक्का दुक्का गाड़ियां सफेदी से पुते पैरापिट दूर से पहाड़ की इस सुंदरता को चार चांद लगाते थे....।

यहां बैंचों पर बैठकर कोई भी ग्राउंड में खेल रहे बच्चों को भी देख सकता था तथा बच्चों की किलकारियों से गूंजती हुई घाटियों के सौंदर्य में भी डूब सकता था।

जंगल कि आबो हवा , मंदिर की साकारात्मक ऊर्जा और खिलखिला कर उछलते- कूदते बचपन का आनंद लेने के लिए यह एक माकूल जगह थी....।

मैंने आज दोपहर बाद से नोटिस किया था कि गुरुजी के चेहरे पर कुछ उदासी सी झलक रही है ।

हम दोनों जब मंदिर के प्रांगण में पहुंचे तो वहां बनी सीमेंट की बेंच पर आकर बैठ गए ।

सामने जो खेल का मैदान था वहां गांव के बच्चे खेल रहे थे। कोई दौड़ की प्रैक्टिस कर रहा था तो कोई बैडमिंटन की।

कुछ बच्चे फुटबॉल खेल रहे थे तो कुछ वॉलीबॉल ...।

सभी बच्चे अपने-अपने खेलों में व्यस्त थे ।

मैंने गुरुजी से इस उदासी का सबब डरते डरते पूछ ही लिया - 'गुरुजी आज आप कुछ उदास दिख रहे हैं क्या वजह है ?'

मैं अक्सर उन्हें सर की जगह गुरुजी ही कहता था ।

उन्होंने मेरे प्रश्न का कोई जवाब नहीं दिया ।

उनके चेहरे पर उभरी उदासी की लकीरें और भी गहरी हो गई...।

अब मुझे इससे आगे पूछने की हिम्मत नहीं हुई।

मैं चुपचाप उनके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा...।

कहते हैं न भीतर का तूफान चेहरे पर उभर ही आता है बेशक आदमी उसे कितना भी ढकने का प्रयास करे।

कुछ देर चुप रहने के बाद बड़े दार्शनिक अंदाज में बोले - 'राजीव देख रहे हो न इन बच्चों को। '

मैंने हां में सिर हिलाया।

तो बोले - 'यह सब कल कहां-कहां पहुंचेंगे क्या तुम बता सकते हो ? '

मैंने कहा - 'जिस क्षेत्र में जितनी मेहनत करेंगे उस क्षेत्र में उतने ही आगे बढ़ते जाएंगे । बाकी कुछ तो ऊपर वाले ने भी तय कर रखा होगा इनके किरदार के बारे में । '

तब वह बोले - 'हां असली बात तो यही है।

सबके किरदार उसी ने तय कर रखे हैं इस दुनिया में ।

इस ड्रामे में हम तो सिर्फ अपना किरदार अदा कर रहे हैं जो उसने हमें दिया है । '

मुझे लगा अब यह अपनी उदासी का सबब बता देंगे परंतु ऐसा नहीं हुआ...।

मैं फिर अपने प्रश्न का उत्तर न पाकर निराश हो गया।

अचानक ही न जाने वह किस दुनिया में पहुंच गए और बोले- 'आज मैं आपको एक कहानी सुनाता हूं ।

शायद आपको अपने प्रश्न का जवाब मिल जाए। '

अब मेरी जिज्ञासा बढ़ गई थी...।

उन्होंने कहानी शुरू कर दी थी और मैं बड़ी शिद्दत के साथ बगल में बेंच पर बैठा बैठा सुन रहा था..।

वह बोले- 'एक गांव में दो लड़के थे। दोनों पड़ोसी थे। एक का बापू सरकारी कर्मचारी था और दूसरे का किसान ।

दोनों हमउम्र थे इसलिए घनिष्ट दोस्त थे।

बचपन में इकट्ठे खेलते हुए बड़े हो रहे थे।

दोनों को गांव के एक ही सरकारी स्कूल में एक ही कक्षा में दाखिल करवाया गया था।

दोनों पढ़ने में होशियार थे। बल्कि किसान का बेटा कर्मचारी के बेटे से ज्यादा कुशाग्र बुद्धि था।

किसान के घर में बहुत गरीबी थी इसलिए पांचवी पास के बाद ढोर- डंगर चराने के लिए उसे स्कूल से हटा लिया गया।

सरकारी कर्मचारी का बेटा चाहता था कि उसका दोस्त भी उसके साथ आगे पढ़े ।

परंतु गरीबी के कारण ऐसा नहीं हो पाया।

उसका दोस्त डंगर चराने में व्यस्त हो गया और सरकारी कर्मचारी का बेटा अपनी आगे की पढ़ाई में।

12वीं की परीक्षा पास करने के बाद घर वालों ने उसे शहर भेज दिया ग्रेजुएशन करने के लिए। क्योंकि उस जमाने में उसके गांव के आसपास कोई कॉलेज नहीं था इसलिए गांव के सारे बच्चे पढ़ने के लिए अक्सर शहर ही जाया करते थे।

वहां जाकर उसने बड़ी मेहनत के साथ पढ़ाई की। पहले ग्रेजुएशन की फिर उसके बाद अंग्रेजी में एम एऔर उसके बाद बी एड की डिग्री पास कर ली।

सरकारी विद्यालय में अध्यापक लगने के लिए अब उसके पास पर्याप्त शिक्षा थी।

लगभग एक साल के बाद ही उसे सरकारी स्कूल में शिक्षक की नौकरी मिल गई।

यानी नाटक में किरदार...।

उधर उसका दोस्त गांव में मेहनत मजदूरी करता ।

फिर उसने मेहनत मजदूरी करने के साथ-साथ

गांव के किसी बैंड मास्टर से बैंड बजाना सीख लिया।

फिर वह एक दिन खुद बैंड मास्टर बन गया । विवाह शादियों में उसकी पार्टी बैंड बजाती।

इस तरह वह अपनी रोटी का जुगाड़ कर लेता था।

समय अपनी गति से चलता रहता है।

समय का अगला पड़ाव आया दोनों दोस्तों की शादियां हुई और बच्चे भी हो गए ।

दोनों के दो-दो बच्चे ।

सरकारी कर्मचारी के पहले लड़का हुआ तो उसके यहां लड़की ।

फिर उसके यहां लड़की हुई तो बैंड मास्टर के यहां लड़का।

सरकारी कर्मचारी की पत्नी यद्यपि गृहिणी ही थी परंतु थोड़ा - बहुत पढ़ी-लिखी थी।

जबकि दूसरे की उसकी ही तरह थी।

समय ने पंख फैलाकर उड़ान भरी तो उनके बच्चे बड़े हो गए थे ।

बेड मास्टर के बच्चों ने एमएससी कर ली थी जबकि सरकारी कर्मचारी के दोनों बच्चे अच्छे-अच्छे स्कूलों में पढ़ाने के बावजूद भी वांछित पढ़ाई न कर पाए...।

दोनों दोस्तों का मिलना जुलना व सामाजिक संबंध आज भी वैसे ही हैं जैसे बचपन में थे।

फिर समय ने अगली उड़ान भरी तो बैंड मास्टर के दोनों बच्चों ने असिस्टेंट प्रोफेसर की परीक्षा पास कर ली और दोनों कॉलेज में असिस्टेंट प्रोफेसर लग गए।

उधर कर्मचारी के बच्चों में लड़का आवारा - नकारा रह गया और बेटी की शादी कर दी गई ।

उधर बैंड मास्टर के बच्चों की भी शादियां हो गई ।

उसके बहु व दामाद भी अच्छे पदों पर कार्यरत थे ।

दोनों दोस्त अभी भी दोस्त हैं।

एक पीढ़ी के अंतराल के बाद आए बदलाव को दोनों भुक्तभोगी बनकर देख रहे हैं।

पिछली पीढ़ी में बैंड मास्टर किसान का बच्चा होने के कारण पीछे छूट गया था और कर्मचारी का बच्चा आगे निकल गया था।

दूसरी पीढ़ी आई तो सरकारी कर्मचारी के बच्चे पीछे छूट गए और बैंड मास्टर के बच्चे आगे निकल गए।

ये सब अपने-अपने किरदार की ही तो बात है जिसे जो किरदार दिया जाता है उसे वह निभाना ही पड़ता है।

यह कहकर वह चुप हो गए...।

मैं बड़े इत्मीनान से उनकी यह कहानी सुन रहा था...।

मैं कहानी में इतना डूब गया था जैसे कोई सामने थिएटर में हो रहे नाटक को देखते हुए उसके पात्रों में ही खो जाता है।

उन पात्रों में ही अपने सुख-दुख तलाश करने लगता है।

मैं भी गुरु जी की इस कहानी में गहरे तक डूब गया था।

कहानी में डूबे हुए हमें पता ही नहीं चला कि ग्राउंड कब का खाली हो चुका है।

खेलने वाले बच्चे अपने-अपने घर चले गए थे और आसमान पर रात की काली चादर बिछने वाली थी।

मैंने कहा - 'गुरुजी कहानी तो आपकी बहुत खूबसूरत है।

मैं तो इस कहानी में खो सा गया था।

ऐसे लग रहा था जैसे आप कोई सच्ची कहानी ही सुना रहे थे.... । '

तब उन्होंने एक शेर सुनाया-

'मुइई लाख करे कोशिश कुछ नहीं होता है।

वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है। '

फिर उन्होंने बुझे मन से कहा- ' इस कहानी का पात्र सरकारी कर्मचारी में ही हूं ,यह कहानी मेरी ही है...।

और फिर आपने जो मेरी उदासी का सबक पूछा था उसका फोन आया था वह बता रही थी कि बेटा शराब पीकर घर में उड़धंग मचा रहा है । सबके साथ गाली गलौज कर रहा है । इसी बात से मन कुछ उद्विग्न हो गया था । '

'लगता है हमने जिंदगी में कुछ नहीं कमाया। '

फिर उन्होंने उदासी भरी गहरी सांस ली।

मैंने कहा - 'गुरु जी आप ही तो कहते हैं , 'सबके लिए इस ईश्वर ने किरदार तय कर रखे हैं।'

फिर छोड़िए ये सब बातें ...।

उसके काम में दखल कैसा.... ? '

उनकी कहानी को सुनकर मैं सोच रहा था - 'कई वर्ष पहले शेक्सपियर ने भी यही कहा था कि यह दुनिया एक रंगमंच है और हम सब इस रंगमंच पर अभिनय करने वाले कलाकार।

सच में इससे ज्यादा हम कुछ नहीं है...। '

तब वह बोले - 'मैं सब समझता हूं। पर बाप का दिल है न मानता ही नहीं.... ।

बाप के दिल के आगे मेरा सारा ज्ञान- विज्ञान अर्थहीन हो जाता है।भावनाएं ज्ञान पर हावी हो जाती हैं। '

अब मैं उनके मन की स्थिति अच्छी तरह समझ गया था।

मैंने कहा-' चलो रात ढलने लगी है अब रूम में चलते हैं । '

उनके मन की दशा से लग रहा था कि आज वे बिना रोटी खाए ही सो जाएंगे। मैंने कहा - 'आज खिचड़ी में बनाऊंगा और आप मेरे रूम में ही मेरे साथ डिनर करेंगे। '

उन्होंने बड़ी आत्मीयता से मेरी ओर देखा।

फिर हम अंधेरे की चादर पर पांव रखते हुए धीरे-धीरे मंदिर के प्रांगण से अपने कमरों की तरफ आ गए...।(7-5-2017)

अशोक दर्द
डलहौजी चंबा हिमाचल प्रदेश

जातिवादी मानसिकता सामाजिक शोषण और कर्म का सिद्धांत

समाज की गति न्याय, समानता और मानवीय गरिमा पर टिकी होती है। भारत के सामाजिक इतिहास में जाति व्यवस्था एक जटिल विषय रही है। आधुनिक युग में जहाँ शिक्षा, वैश्विक चेतना और संवैधानिक कानून ने लोगों को समान अधिकार दिए हैं, वहीं समाज के कुछ हिस्सों में आज भी उच्च जाति के होने का झूठा अहंकार और कुंठित विचार जीवित हैं। जब यह कुंठा वंचित वर्गों के सुनियोजित शोषण और गंभीर अपराध का रूप ले लेती है, और पूरी जाति अपराधी के बचाव में उतर आती है, तो यह सामाजिक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न कर देता है। आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से, यह कृत्य 'कर्म' के सार्वभौमिक नियम का सबसे गंभीर उल्लंघन है, जिसका परिणाम अंततः विनाशकारी होता है।

सदियों से मिले असीमित विशेषाधिकारों को जब आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों, आर्थिक आत्मनिर्भरता और शोषित वर्गों की बढ़ती चेतना व सामाजिक जागरूकता से चुनौती मिलती है, तो कुछ संकीर्ण मानसिकता के लोगों में वर्चस्व खोने का डर और कुंठा पैदा होती है। अपनी तथाकथित ऐतिहासिक श्रेष्ठता और सत्ता को जबरन सिद्ध करने के लिए वे कमजोर, दलित या वंचित समाज पर मानसिक, आर्थिक और शारीरिक जुर्म करते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि किसी भी सभ्य समाज में जन्म का स्थान गौरव का आधार नहीं हो सकता।

उच्च जाति के कुछ तत्वों में पनपने वाला यह विचार वास्तव में उनकी मानसिक संकीर्णता और आधुनिक समाज के साथ तालमेल न बिठा पाने की छटपटाहट को दर्शाता है। इस विकृत समस्या का सबसे भयावह रूप तब देखने को मिलता है जब कोई व्यक्ति अपनी जाति के नशे में अंधा होकर कोई जघन्य अपराध करता है और उसकी पूरी जाति के लोग पीड़ित का साथ देने के बजाय अपराधी के पक्ष में लामबंद हो जाते हैं। जातिगत पंचायतों, गुप्त बैठकों या सार्वजनिक सामाजिक दबाव के माध्यम से अपराधी को 'जाति का गौरव' या 'रक्षक' बताकर बचाने का घृणास्पद प्रयास किया जाता है। गवाहों को डराना, पीड़ित परिवार पर झूठे मुकदमे दर्ज करवाना, पुलिस प्रशासन पर राजनीतिक दबाव बनाना और पीड़ित परिवार को ही समाज से बहिष्कृत कर दोषी ठहराना इस कुंठित मानसिकता का सीधा प्रमाण है। जब समाज का एक बड़ा धड़ा किसी अपराधी की ढाल बन जाता है, तो वह न्याय की बुनियादी परिभाषा को ही बदल देता है। यह स्थिति समाज में एक ऐसे खतरनाक संदेश को जन्म देती है जहाँ अपराधी को लगता है कि उसकी जाति उसके अपराधों के लिए एक अभेद्य कवच है। सामाजिक विज्ञान के दृष्टिकोण से, अपराधी का इस प्रकार सामूहिक समर्थन करना सामूहिक अपराध बोध और नैतिक पतन को जन्म देता है। जब समाज का एक प्रभुत्वशाली वर्ग न्याय की अनदेखी कर केवल रक्त-संबंध और जातिगत पहचान को सर्वोपरि मानने लगता है, तो कानून का डर खत्म हो जाता है और समाज में अराजकता व हिंसा की भावना मजबूत होती है। भारतीय दर्शन में कर्मा का सिद्धांत बेहद स्पष्ट, अटल और पूर्णतः न्यायप्रिय है– 'जैसा बोओगे, वैसा काटोगे।' कर्म का नियम किसी व्यक्ति के कृत्रिम सामाजिक रसूख, धन या ऊँची जाति की झूठी दीवारों को देखकर अपना न्याय कभी नहीं बदलता।

कर्म के सिद्धांत के अनुसार, किसी जुर्म को मौन सहमति देना, अपराधी को आर्थिक या सामाजिक संरक्षण देना भी उतना ही बड़ा अक्षम्य पाप है जितना स्वयं अपराध करना। इस सामूहिक पाप का अदृश्य फल उस पूरे समाज की आने वाली निर्दोष पीढ़ियों को भी किसी न किसी रूप में भुगतना पड़ता है। अपराधी और उसके अंधभक्त समर्थक अक्सर यह सोचते हैं कि वे अपने राजनीतिक रसूख, बाहुबल या धन के दम पर मानव-निर्मित कानून और अदालतों को धोखा दे देंगे। वे अस्थायी रूप से और भौतिक जगत में बच भी सकते हैं, लेकिन कर्मा का ब्रह्मांडीय न्याय अत्यंत सूक्ष्म, गहरा और अचूक होता है।कर्मा का यह खाता तात्कालिक लाभों से प्रभावित नहीं होता। जो लोग सोचते हैं कि वे अपने रसूख के कारण बच गए हैं, वे कर्मा की धीमी लेकिन बेहद बारीक पिसाई से अनभिज्ञ होते हैं। ब्रह्मांड का नियम संतुलन पर काम करता है।इस गहरी सामाजिक कुप्रथा को जड़ से समाप्त करने के लिए हमें दो मुख्य स्तरों पर दृढ़ता से काम करना होगा। पहला उपाय है अत्यंत कठोर कानूनी और प्रशासनिक व्यवस्था, जहाँ देश की न्याय प्रणाली बिना किसी जातिगत या राजनीतिक दबाव के पूरी तरह स्वतंत्र और निष्पक्ष होकर काम करे, तथा अपराधियों को बिना किसी देरी के कड़ा दंड मिले। कानून को यह सुनिश्चित करना होगा कि अपराधी का साथ देने वाले तत्वों पर भी कानूनी शिकंजा कसा जाए। दूसरा और सबसे महत्वपूर्ण उपाय है एक व्यापक वैचारिक और सांस्कृतिक क्रांति। हमारी शिक्षा प्रणाली, पारिवारिक संस्कारों और जन-जागरण अभियानों को युवाओं के मन में यह बात गहराई से बिठानी होगी कि किसी व्यक्ति की श्रेष्ठता उसके जन्म की जाति से नहीं, बल्कि उसके उत्तम कर्मों, मानवीय संवेदनाओं और चरित्र की शुद्धता से तय होती है उच्च जाति के नाम पर किया गया शोषण, निर्बलों पर किए गए अत्याचार और अपराधी का अंधा सामाजिक समर्थन केवल एक तात्कालिक सामाजिक बुराई नहीं है, बल्कि यह कर्मा की सर्वोच्च अदालत में सबसे बड़ा और अक्षम्य अपराध है। इतिहास गवाह है कि जिसने भी अपनी क्षणभंगुर शक्ति और जाति के झूठे अहंकार में आकर निर्बलों को सताया है, कर्मा ने समय के साथ उसका अस्तित्व और नामोनिशान तक मिटा दिया है। एक स्वस्थ, सशक्त और प्रगतिशील समाज का निर्माण तभी संभव है जब हम जाति की इन संकीर्ण दीवारों को पूरी तरह गिराकर अपराधी को केवल एक अपराधी के रूप में देखें और पीड़ित को न्याय का पूर्ण हकदार समझें

।चन्द्रकांत खुंटे क्रांति (छत्तीसगढ़)